(हफ़्तावार रिसाला : 195
Weekly Booklet : 195)

Irshadate Imam Ahmad Raza (Hindi)

(رحمۃ اللہ علیہ)

इर्शादाते इमाम अह़मद रज़ा

सफ़ह़ात 19

- इल्मे ख़ुदावन्दी की शान 03
- इल्म व ‘उलमा के बारे में फ़रामीन 06
- शैत़ान के धोके 12

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**इर्शादाते इमाम अह़मद रज़ा**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इर्शादाते इमाम अहमद रज़ा

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़्हात का रिसाला : ''इर्शादाते इमाम अहमद रज़ा'' पढ़ या सुन ले उसे इमाम अहमद रज़ा ख़ान (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमा कर बिला हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दुरूद (शरीफ़) दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है उन सब) से बेहतर और दोनों जहान के लिये काफ़ी है । इस का सवाब त़ाआ़ते हज़ार साल (या'नी हज़ार साल की इ़बादत) के सवाब से ज़ियादा और इस का रुत्बा अक्सर इ़बादाते बदनिय्या और मालिया और क़ौलिया (या'नी जिस्मानी, माली और ज़बान की इ़बादात) से आ'ला है और येह फ़ज़्लो इ़नायत इस उम्मते बा बरकत पर उस साहिबे दौलत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बदौलत है, वरना हम कब इस इ़नायत के लाइक़ और इस करामत (या'नी बुज़ुर्गी) के मुस्तह़िक़ थे ।

(सुरूल क़ुलूब फ़ी ज़िक्रिल मह़बूब, स. 340 ब तग़य्युरो तस्हील)

गर्चे हैं बेह़द क़ुसूर तुम हो अ़फ़ुव्वो ग़फ़ूर बख़्श दो जुर्मो ख़त़ा तुम पे करोरों दुरूद

(मुश्किल अल्फ़ाज़ : **अ़फ़ू :** मुआ़फ़ करने वाले, **ग़फ़ूर :** बख़्शने वाले)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तआरुफ़े आ'ला ह़ज़रत

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की विलादत (Birth) बरेली शरीफ़ के मह़ल्ला जसूली में 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हि. बरोज़ हफ़्ता ब वक़्ते ज़ोह्र मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई। (ह़यात आ'ला ह़ज़रत, 1/58) आप का नामे मुबारक "मुह़म्मद" है और आप के दादा ने अह़मद रज़ा कह कर पुकारा और इसी नाम से मश्हूर हुए। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने कमो बेश 50 उ़लूम में क़लम उठाया और बड़ी इ़ल्मी आन शान की कुतुब लिखीं, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अक्सर किताबें लिखने में मसरूफ़ रहते। पांचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होते और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमाया करते, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर कमो बेश एक हज़ार किताबें लिखी हैं।

(तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 16)

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुख़्तलिफ़ इर्शादाते मुबारका पढ़िये और इ़ल्मे दीन का ख़ज़ाना लूटिये, येह इर्शादाते इमाम अह़मद रज़ा सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मुख़्तलिफ़ कुतुब से लिये गए हैं। वलिय्ये कामिल, आ़शिक़ों के इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़रामीन आप की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ शो'बों में बड़े काम आने वाले **"रहनुमा उ़सूल"** साबित होंगे। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की अपनी इ़ल्मी शान और उस वक़्त की उर्दू के ए'तिबार से इन इर्शादात को ह़त्तल इम्कान आसान अल्फ़ाज़ में पेश करने के लिये मौक़अ़ की मुनासबत से ब्रेकेट लगाई गई हैं, **अल्लाह** करीम हमें इर्शादाते इमाम अह़मद रज़ा (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

इल्मे ख़ुदावन्दी की शान

﴾1﴿ बिला शुबा हक़ येही है कि तमाम अम्बियाओ मुरसलीन व मलाइकए मुक़र्रबीन व अव्वलीनो आख़िरीन के मज्मूआ़ उ़लूम (या'नी सारे नबियों, रसूलों, मुक़र्रब फ़िरिश्तों और अगले पिछलों के इ़ल्म) मिल कर इ़ल्मे बारी (या'नी **अल्लाह** पाक के इ़ल्म) से वोह निस्बत नहीं रख सकते जो एक बूंद (Drop) के करोड़वें हि़स्से को करोड़ों समुन्दरों से है।

(फ़तावा रज़विय्या, 14/377)

आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान

﴾2﴿ कोई दौलत, कोई ने'मत, कोई इ़ज़्ज़त जो ह़क़ीक़तन दौलतो इ़ज़्ज़त हो ऐसी नहीं कि **अल्लाह** पाक ने किसी और को दी हो और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा न की हो। जो कुछ जिसे अ़त़ा हुवा या अ़त़ा होगा दुन्या में या आख़िरत में वोह सब हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में है, हुज़ूर के तुफ़ैल में है, हुज़ूर के हाथ से अ़त़ा हुवा। (फ़तावा रज़विय्या, 29/93)

﴾3﴿ उम्मत के तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल व आ'माल रोज़ाना दो वक़्त सरकारे अ़र्श वक़ार हुज़ूर सय्यिदुल अबरार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ (पेश) किये जाते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 29/568)

﴾4﴿ "कान बजने" का येही "सबब" है कि वोह आवाज़े जां गुदाज़ उस मा'सूम आ़सी नवाज़ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की (उम्मती उम्मती) जो हर वक़्त बुलन्द है, गाहे (या'नी कभी कभी) हम (में) से किसी ग़ाफ़िल व मदहोश के गोश (कान) तक पहुंचती है, रूह़ उसे इदराक करती (या'नी पहचानती) है। (फ़तावा रज़विय्या, 30/712)

﴾5﴿ मजलिसे मीलादे मुबारक, ज़िक्र शरीफ़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है और "**हुज़ूर**" का ज़िक्र "**अल्लाह पाक**" का ज़िक्र और ज़िक्रे इलाही से बिला वज्हे शर्ई मन्अ़ करना "**शैत़ान का काम**" है। (फ़तावा रज़विय्या, 14/668)

﴾6﴿ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाह और नबी या वली को "**सवाब बख़्शना कहना**" बे अदबी है, "बख़्शना" बड़े की त़रफ़ से छोटे को होता है, बल्कि नज़्र करना या हदिय्या (या'नी गिफ़्ट) करना कहे।

(फ़तावा रज़विय्या, 26/609)

﴾7﴿ हिदायत तो नबिय्ये उम्मी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मानने पर मौक़ूफ़ है जो उन को न माने उसे हिदायत नहीं और जब हिदायत नहीं ईमान कहां ?

(फ़तावा रज़विय्या, 14/703)

﴾8﴿ शरीअ़त हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल हैं और त़रीक़त हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अफ़्आ़ल और ह़क़ीक़त हुज़ूर के अह़वाल और मा'रिफ़त हुज़ूर के उ़लूमे बे मिसाल। (फ़तावा रज़विय्या, 21/460)

﴾9﴿ मुसल्मान के दिल में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तवस्सुल (या'नी वसीला पकड़ना) रचा हुवा है। इस की कोई दुआ़ तवस्सुल से ख़ाली नहीं होती अगर्चे बा'ज़ वक़्त ज़बान से न कहे। (फ़तावा रज़विय्या, 21/194)

﴾10﴿ नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बल्कि तमाम अम्बिया व औलियाउल्लाह की याद में "**ख़ुदा की याद**" है कि उन की याद है तो इसी लिये कि वोह **अल्लाह** के नबी हैं, येह **अल्लाह** के वली हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 26/529)

तबर्रुकाते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾11﴿ नबी (करीम) صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आसार व तबर्रुकाते शरीफ़ा की ता'ज़ीम दीने मुसल्मान का फ़र्ज़े अ़ज़ीम है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/414)

﴾12﴿ तबर्रुकाते शरीफ़ा भी **अल्लाह** पाक की निशानियों से उ़म्दा (या'नी बेहतरीन) निशानियां हैं इन के ज़रीए़ से दुन्या की ज़लील क़लील पूंजी (या'नी ह़क़ीर रक़म) ह़ासिल करने वाला दुन्या के बदले दीन बेचने वाला है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/417)

﴾13﴿ तमाम उम्मत पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़क़ है कि जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आसारे शरीफ़ा (या'नी तबर्रुकात में) से कोई चीज़ देखें या वोह शै देखें जो हुज़ूर के आसारे शरीफ़ा (में) से किसी चीज़ पर दलालत करती हो तो उस वक़्त कमाले अदबो ता'ज़ीम के साथ हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर लाएं और दुरूदो सलाम की कसरत करें। (फ़तावा रज़विय्या, 21/422)

फ़ैज़ाने अम्बिया व औलियाए किराम (علیہم السلام ورحمہم اللہ)

﴾14﴿ आ़लम में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का तसर्रुफ़ (या'नी इख़्तियार) ह़याते दुन्यवी (या'नी जिस्मानी ज़िन्दगी) में और बा'दे विसाल भी ब अ़त़ाए इलाही जारी और क़ियामत तक उन का दरियाए फ़ैज़ मोजज़न (या'नी जारी) रहेगा। (फ़तावा रज़विय्या, 29/616)

﴾15﴿ मह़बूबाने ख़ुदा की त़रफ़ जाना और बा'दे विसाल उन की क़ुबूर की त़रफ़ चलना दोनों यक्सां (या'नी बराबर हैं) जैसा कि इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के साथ किया करते। (फ़तावा रज़विय्या, 7/607)

﴾16﴿ मह़बूबाने ख़ुदा (या'नी **अल्लाह** वाले) आयए रह़मत (या'नी रह़मत की निशानी) हैं, वोह अपना नाम लेने वाले को अपना कर लेते हैं और उस पर नज़रे रह़मत रखते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 21/508)

﴾17﴿ मशाइख़े किराम दुन्या व दीन व नज़्अ़ व क़ब्र व ह़श्र सब ह़ालतों में अपने मुरीदीन की इमदाद फ़रमाते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 21/464)

﴾18﴿ बरकत वालों की त़रफ़ जो चीज़ निस्बत की जाती है उस में बरकत आ जाती है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/614)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नाम

﴾19﴿ सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) में बीस से ज़ाइद का नाम "ह़कम" है, तक़रीबन दस का नाम "ह़कीम", और साठ से ज़ियादा का "ख़ालिद" और एक सो दस से ज़ियादा का "मालिक"। (फ़तावा रज़विय्या, 21/359)

फ़ैज़ाने इल्म व उ़लमा

﴾20﴿ येह लफ़्ज़ कि "**मौलवी लोग क्या जानते हैं**" इस से ज़रूर उ़लमा की तह़क़ीर (या'नी तौहीन) निकलती है और उ़लमाए दीन की तह़क़ीर (या'नी तौहीन) कुफ़्र है। (फ़तावा रज़विय्या, 14/244)

﴾21﴿ आ़लिमे दीन को, जिस के इ़ल्म की त़रफ़ यहां (या'नी उस शह़र) के लोगों को ह़ाजत है उसे हिजरत ना जाइज़ है, हिजरत दर कनार (या'नी दूर की बात उ़लमा) उसे सफ़रे त़वील की इजाज़त नहीं देते। (फ़तावा रज़विय्या, 21/282)

﴾22﴿ उ़लमाए शरीअ़त की ह़ाजत हर मुसल्मान को हर आन (या'नी हर वक़्त) है और त़रीक़त में क़दम रखने वाले को और ज़ियादा।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/535)

﴾23﴿ आ़म लोग हरगिज़ हरगिज़ किताबों से अह़काम निकाल लेने पर क़ादिर नहीं। हज़ार जगह ग़लती करेंगे और कुछ का कुछ समझेंगे, इस लिये येह सिल्सिला मुक़र्रर है कि अ़वाम आज कल के अहले इ़ल्म व दीन का दामन थामें। (फ़तावा रज़विय्या, 21/462)

﴾24﴿ जाहिलों से फ़तवा लेना ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या, 12/426)

शरीअ़त की पाबन्दी

﴾25﴿ जिस का ज़ाहिर ज़ेवरे शर्अ़ से आरास्ता नहीं (या'नी जो ज़ाहिरी तौ़र पर शरीअ़त के अह़काम की पाबन्दी नहीं करता) वोह बात़िन में भी **अल्लाह** पाक के साथ इख़्लास नहीं रखता। (फ़तावा रज़विय्या, 21/541)

﴾26﴿ शरीअ़त ही सिर्फ़ वोह "**राह**" है जिस का मुन्तहा "**अल्लाह**" है और जिस से वुसूल इलल्लाह (या'नी ख़ुदा तक पहुंचना) है और इस के बिग़ैर आदमी जो राह चलेगा **अल्लाह** की राह से दूर पड़ेगा।

(फ़तावा रज़विय्या, 29/388)

﴾27﴿ दुन्या गुज़श्तनी (या'नी गुज़र जाने वाली) है, यहां अह़कामे शर्अ़ (शरीअ़त की मुक़र्रर की गई सज़ाएं) जारी न होने से ख़ुश न हों। एक दिन इन्साफ़ का आने वाला है जिस में शाख़दार (या'नी सींग वाली) बकरी से मुन्डी (या'नी बे सींग की) बकरी का ह़िसाब लिया जाएगा। (फ़तावा रज़विय्या, 16/310)

﴾28﴿ ना जाइज़ बात को अगर कोई बद मज़हब या काफ़िर मन्अ़ करे तो उसे जाइज़ नहीं कहा जा सकता। (फ़तावा रज़विय्या, 21/154)

﴾29﴿ किसी चीज़ की मुमानअ़त क़ुरआन व ह़दीस में न हो तो उसे मन्अ़ करने वाला (गोया) ख़ुद ह़ाकिम व शारेअ़ (या'नी साह़िबे शरीअ़त) बनना चाहता है। (फ़तावा रज़विय्या, 11/405)

﴾30﴿ शर्ए़ मुत़ह्हर शे'र व ग़ैरे शे'र सब पर ह़ुज्जत (या'नी दलील) है, शे'र शर्अ़ पर ह़ुज्जत नहीं हो सकता। (फ़तावा रज़विय्या, 21/118)

﴾31﴿ इत़ाअ़ते वालिदैन जाइज़ बातों में फ़र्ज़ है अगर्चे वोह (या'नी वालिदैन) ख़ुद मुरतकिबे कबीरा हों। (फ़तावा रज़विय्या, 21/157)

﴾32﴿ जिस त़रह़ औ़रतें अक्सर तस्ख़ीरे शौहर (या'नी शौहर को अपने क़ाबू में करना) चाहती हैं कि शौहर हमारे कहने में हो जाए जो हम कहें वोही करे, येह ह़राम है। या येह चाहती हैं कि अपनी मां बहन से जुदा हो जाए या उन को कुछ न दे हमीं को दे, येह सब मरदूद ख़्वाहिशें हैं। **अल्लाह** पाक ने शौहर को ह़ाकिम बनाया न कि मह़कूम (ख़ादिम)।

(फ़तावा रज़विय्या, 26/607 मुल्तक़त़न व ब तक़द्दुम व तअख़्ख़ुर)

﴾33﴿ जिन्न ग़ैब से निरे (या'नी बिल्कुल) जाहिल हैं, उन से आयिन्दा की बात पूछनी अ़क़्लन ह़माक़त (या'नी बे वुक़ूफ़ी) और शर्अ़न ह़राम और उन की ग़ैबदानी का ए'तिक़ाद (या'नी जिन्नात को ग़ैब का इ़ल्म होने का अ़क़ीदा रखना) तो कुफ़्र (है)। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 178)

﴾34﴿ नसब के सबब अपने आप को बड़ा जानना, तकब्बुर करना जाइज़ नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 23/255)

﴾35﴿ ह़राम खाना कभी जाइज़ नहीं होता, जिस वक़्त जाइज़ होता है उस वक़्त वोह ह़राम नहीं रहता। (फ़तावा रज़विय्या, 21/225)

﴾36﴿ जिस चीज़ को ख़ुदा व रसूल अच्छा बताएं वोह अच्छी है, और जिसे बुरा फ़रमाएं वोह बुरी, और जिस से सुकूत (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार) फ़रमाएं या'नी शर्अ़ से न उस की ख़ूबी निकले न बुराई वोह इबाह़ते अस्लिय्या पर रहती है कि उस के फ़े'ल व तर्क (करने या न करने) में सवाब न इ़क़ाब (सज़ा)। (फ़तावा रज़विय्या, 23/320)

﴾37﴿ कोई शख़्स ऐसे मक़ाम तक नहीं पहुंच सकता जिस से नमाज़ रोज़ा वग़ैरा अह़कामे शर्इय्या साक़ित़ (या'नी मुआ़फ़) हो जाएं जब तक अ़क़्ल बाक़ी है। (फ़तावा रज़विय्या, 14/409)

﴾38﴿ जो बा वस्फ़े बक़ाए अ़क़्लो इस्तिता़अ़त (या'नी जिस की अ़क़्लो हिम्मत सलामत और बाक़ी हो) क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) नमाज़ या रोज़ा तर्क करे हरगिज़ वलिय्युल्लाह नहीं (बल्कि) वलिय्युश्शैत़ान (या'नी शैत़ान का दोस्त) है। (फ़तावा रज़विय्या, 14/409)

﴾39﴿ हमारी शर्अ़ بِحَمْدِاللّٰہ अबदी (या'नी हमेशा रहने वाली) है, जो क़ाइदे इस के पहले थे क़ियामत तक रहेंगे, مَعَاذَاللّٰہ ज़ैद व अ़म्र का क़ानून तो है ही नहीं कि तीसरे साल बदल जाए। (फ़तावा रज़विय्या, 26/540)

﴾40﴿ मुसल्मान होने से दोनों जहान की इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है।

(फ़तावा रज़विय्या, 11/719)

﴾41﴿ जो शख़्स ह़दीस का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) है वोह नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुन्किर है और जो नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुन्किर है वोह क़ुरआने मजीद का मुन्किर है और जो क़ुरआने मजीद का मुन्किर है **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार का मुन्किर है। (फ़तावा रज़विय्या, 14/312)

﴾42﴿ ज़बान से सब कह देते हैं कि हां हमें **अल्लाह** पाक व रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बतो अ़ज़मत सब से ज़ाइद है मगर अ़मली कार रवाइयां आज़्माइश (इम्तिह़ान) करा देती हैं कि कौन इस दा'वे में झूटा और कौन सच्चा (है)। (फ़तावा रज़विय्या, 21/177)

मौत की तय्यारी

﴾43﴿ आदमी हर वक़्त मौत के क़ब्ज़े में है, मदकूक़ (या'नी मरीज़) अच्छा हो जाता है और वोह जो उस के तीमार (या'नी बीमार पुरसी) में दौड़ता था उस से पहले चल देता है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/81)

मुसल्मान भाइयों से ख़ैर ख़्वाही

﴾44﴿ बिरादराने इस्लाम (या'नी मुसल्मान भाइयों) को अह़कामे इस्लाम से इत्तिलाअ़ देनी "**ख़ैर ख़्वाही**" है और मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही हर मुसल्मान का ह़क़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 16/243)

﴾45﴿ हुक़ूक़ुल इबाद जिस क़दर हों, जो अदा करने के हैं (आदमी उन को) अदा करे, जो मुआ़फ़ी चाहने के हैं मुआ़फ़ी चाहे और इस में अस्लन (या'नी बिल्कुल) ताख़ीर को काम में न लाए (या'नी देर न करे) कि येह शहादत से भी मुआ़फ़ नहीं होते। (फ़तावा रज़विय्या, 9/82)

﴾46﴿ जब वक़्त लोगों की नींद का हो या कुछ (अफ़राद) नमाज़ पढ़ रहे हों तो ज़िक्र करो जिस त़रह़ (चाहो) मगर न इतनी आवाज़ से कि उन को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) हो। (फ़तावा रज़विय्या, 23/179)

﴾47﴿ मुआ़फ़ी चाहने में कितनी ही तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) करनी पड़े इस में अपनी कस्रे शान (या'नी बे इ़ज़्ज़ती) न समझे, इस में ज़िल्लत (या'नी बे इ़ज़्ज़ती) नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 9/82)

﴾48﴿ मुसल्मानों को लिवज्हिल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये) ता'वीज़ात व आ'माल दिये जाएं, दुन्यवी नफ़्अ़ की त़मअ़ (या'नी लालच) न हो। (फ़तावा रज़विय्या, 26/608)

﴾49﴿ मुसल्मानों को नफ़्अ़ रसानी (या'नी फ़ाएदा पहुंचाने) से **अल्लाह** पाक की रिज़ा व रह़मत मिलती है और उस की रह़मत दोनों जहान का काम बना देती है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/621)

﴾50﴿ ईसाले सवाब जिस त़रह़ मन्ए़ अ़ज़ाब (या'नी अ़ज़ाब को रोकने) या रफ़्ए़ इ़क़ाब (या'नी अ़ज़ाब के उठने) में बि इज़्निल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक के हुक्म से) काम देता है यूंही रफ़्ए़ दरजात व ज़ियादते ह़सनात (या'नी दरजात की बुलन्दी और नेकियों के इज़ाफ़े) में (भी काम देता है) ।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/607)

बात़िनी बीमारियां

﴾51﴿ अगर अपनी झूटी ता'रीफ़ को दोस्त (या'नी पसन्द) रखे कि लोग उन फ़ज़ाइल से इस की सना (ता'रीफ़) करें जो इस में नहीं जब तो सरीह़ ह़रामे क़त़्ई है । (फ़तावा रज़विय्या, 21/597)

﴾52﴿ हुब्बे सना (या'नी अपनी ता'रीफ़ को पसन्द करना) ग़ालिबन ख़स्लते मज़्मूमा (या'नी बुरी आ़दत) है और इस के अ़वाक़िब (या'नी नताइज) ख़त़रनाक हैं । (फ़तावा रज़विय्या, 21/596 मुल्तक़त़न)

﴾53﴿ नजासते बात़िन नजासते ज़ाहिर से करोड़ दरजा बदतर है, नजासते ज़ाहिर एक धार पानी से पाक हो जाती है और नजासते बात़िन करोड़ों समुन्दरों से नहीं धुल सकती जब तक सिद्क़े दिल (या'नी सच्चे दिल) से ईमान न लाए । (फ़तावा रज़विय्या, 14/406)

﴾54﴿ जिस ने अपने नफ़्स को सच्चा समझा उस ने झूटे की तस्दीक़ की और ख़ुद इस का मुशाहदा भी करेगा । (फ़तावा रज़विय्या, 10/698)

﴾55﴿ अ़क़्ल व नक़्ल व तजरिबा सब शाहिद (या'नी गवाह) हैं कि नफ़्से अम्मारा की बाग (या'नी लगाम) जितनी खींचिये दबता है और जिस क़दर ढील दीजिये ज़ियादा पाउं फैलाता है । (फ़तावा रज़विय्या, 12/469)

शैत़ान के धोके

﴾56﴿ **अल्लाह** पाक पनाह दे इब्लीसे लईन के मकाइद (या'नी मक्रो फ़रेब) से, सख़्त तर कैद (या'नी धोका) येह है कि आदमी से ह़सनात (या'नी नेकियों) के धोके में सय्यिआत (या'नी गुनाह) कराता है और शह्द के बहाने ज़ह्र पिलाता है وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن । (फ़तावा रज़विय्या, 21/426)

﴾57﴿ बे इल्म मुजाहदा (या'नी इल्मे दीन के बिग़ैर इबादतो रियाज़त करने) वालों को शैत़ान उंग्लियों पर नचाता है, मुंह में लगाम, नाक में नकेल डाल कर जिधर चाहे खींचे फिरता है ﴿وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا﴾ (پ16، الکہف:104)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह अपने जी में समझते हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 21/528)

﴾58﴿ जो शैत़ान को दूर समझता है शैत़ान उस से बहुत क़रीब है।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/686)

﴾59﴿ जिस पर शैत़ान के वसाविस मख़्फ़ी (या'नी छुपे) हों उस इन्सान पर शर व ख़ैर में इल्तिबास (या'नी शुबा) हो जाता है और शैत़ान उसे ह़सनात (या'नी भलाइयों) से सय्यिआत (या'नी बुराइयों) की त़रफ़ ले जाता है और इस बात से बा अ़मल उ़लमा ही आगाह हो सकते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 10/685)

नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त पाने का नुस्ख़ा

﴾60﴿ सोते वक़्त **अल्लाह** पाक से तौफ़ीक़े जमाअ़त (या'नी नमाज़े बा जमाअ़त पाने) की दुआ़ और उस पर सच्चा तवक्कुल (कर) मौला करीम जब तेरा हुस्ने निय्यत व सिद्क़े अ़ज़ीमत (या'नी अच्छी निय्यत और इरादे की सच्चाई) देखेगा ज़रूर तेरी मदद फ़रमाएगा। (फ़तावा रज़विय्या, 7/90)

मुख़्तलिफ़ इर्शादाते रज़ा

﴾61﴿ आज कल अक्सर लोग बेटी के बियाह (या'नी निकाह़) के लिये भीक मांगते हैं और इस से मक़्सूद रुसूमे मुरव्वजए (हिन्द में राइज रस्मों) का पूरा करना होता है, ह़ालां कि वोह रस्में अस्लन (या'नी बिल्कुल) ह़ाजते शर्इ़या नहीं तो उन के लिये सुवाल ह़लाल नहीं हो सकता।

(फ़ज़ाइले दुआ़, स. 270)

﴾62﴿ निकाह़ शीशा है और त़लाक़ संग (या'नी पथ्थर), शीशे पर पथ्थर ख़ुशी से फेंके या जब्र (या'नी ज़बर दस्ती) से या ख़ुद हाथ से छुट पड़े शीशा हर त़रह़ टूट जाएगा। (फ़तावा रज़विय्या, 12/385)

﴾63﴿ अहले क़ुबूर (या'नी क़ब्र वालों) की क़ुव्वते सामिआ़ (या'नी सुनने की त़ाक़त) इस दरजे तेज़ व साफ़ व क़वी तर (या'नी मज़बूत़) है कि नबातात (या'नी पौदों) की तस्बीह़ जिसे अक्सर अह्या (या'नी ज़िन्दा अफ़राद) नहीं सुनते वोह (क़ब्र वाले उसे) बिला तकल्लुफ़ (या'नी बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के) सुनते और उस से उन्स (राह़त) ह़ासिल करते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 9/760)

﴾64﴿ सुन्नते नबविय्या है कि जहां इन्सान से कोई तक़्सीर (या'नी ख़त़ा) वाक़ेअ़ हो अ़मले सालेह़ (नेक काम) वहां से हट कर करे।

(फ़तावा रज़विय्या, 7/609)

﴾65﴿ जो तन्दुरुस्त हो आ'ज़ा सह़ीह़ रखता हो नोकरी ख़्वाह मज़दूरी अगर्चे डलिया (या'नी छोटी टोकरी) ढोने के ज़रीए़ से रोटी कमा सकता हो उसे सुवाल करना (या'नी भीक मांगना) ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/416)

﴾66﴿ परेशान नज़री (बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) व आवारा गर्दी बाइ़से मह़रूमी है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/475)

﴾67﴿ बहुत (से) अय्यार (या'नी धोकेबाज़) अपने बचाव और मुसल्मानों को धोका देने के लिये ज़बानी तौबा कर लेते हैं और क़ल्ब (या'नी दिल) में वोही फ़साद भरा हुवा (होता) है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/146)

﴾68﴿ हक़ीक़तन हक़्क़े दोस्ती येही है कि ग़लती पर मुतनब्बेह (या'नी आगाह) किया जाए। (फ़तावा रज़विय्या, 16/371)

﴾69﴿ बारहा तजरिबा कार कम इल्मों की राय किसी इन्तिज़ामी अम्र (मुआमले) में ना तजरिबा कार ज़ी इल्म की राय से साइब तर (या'नी ज़ियादा दुरुस्त) हो सकती है। (फ़तावा रज़विय्या, 16/128)

﴾70﴿ मां बाप अगर गुनाह करते हों तो उन से ब नरमी व अदब गुज़ारिश करे अगर मान लें बेहतर वरना सख़्ती नहीं कर सकता बल्कि ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजूदगी) में उन के लिये दुआ करे। (फ़तावा रज़विय्या, 21/157)

﴾71﴿ काफ़िर को "राज़दार" बनाना मुत्लक़न मम्नूअ़ है अगर्चे उमूरे दुन्यविय्या में हो, वोह हरगिज़ ता क़दरे क़ुदरत (या'नी जहां तक मुम्किन होगा) हमारी बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहने) में कमी न करेंगे।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/233)

﴾72﴿ फ़ोहूश कलिमा (या'नी बे हयाई की बात) से हमेशा इज्तिनाब चाहिये।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/294)

﴾73﴿ नियाज़ का ऐसे खाने पर होना बेहतर है जिस का कोई हिस्सा फेंका न जाए, जैसे ज़र्दा या हल्वा या खुश्का (या'नी उबले हुए चावल) या वोह पुलाव जिस में से हड्डियां अलाहदा कर ली गई हों। (फ़तावा रज़विय्या, 9/612)

﴾74﴿ अपने और अपने अहबाब के नफ़्स व अहलो माल व वलद (या'नी अपने दोस्तों और उन की औलाद वग़ैरा) पर बद दुआ न करे, क्या मा'लूम

कि वक़्ते इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत का वक़्त) हो और बा'दे वुक़ूए बला (या'नी मुसीबत में पड़ने के बा'द) फिर नदामत हो। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 212)

﴾75﴿ बच्चे को पाक कमाई से रोज़ी दे कि नापाक माल नापाक ही आ़दतें डालता है। (फ़तावा रज़विय्या, 24/453)

﴾76﴿ मां बाप की त़रफ़ से बा'दे मौत क़ुरबानी करना अज्रे अ़ज़ीम है इस (क़ुरबानी करने वाले) के लिये भी और उस के वालिदैन के लिये भी।

(फ़तावा रज़विय्या, 20/597)

﴾77﴿ रोटी बाएं (उलटे) हाथ में ले कर दहने (सीधे) हाथ से नवाला तोड़ना दफ़्ए़ तकब्बुर (या'नी तकब्बुर दूर करने) के लिये है।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/669)

﴾78﴿ अ़क़्ल मन्द और सआ़दत मन्द अगर उस्ताज़ से बढ़ भी जाएं तो इसे उस्ताज़ का फ़ैज़ और उस की बरकत समझते हैं और पहले से भी ज़ियादा उस्ताज़ के पाउं की मिट्टी पर सर मलते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 24/424)

﴾79﴿ बे दर्द को पराई (या'नी दूसरों की) मुसीबत नहीं मा'लूम होती।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/310)

﴾80﴿ जहां तक मुम्किन हो मुख़ालफ़ते आ़दते मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों की आ़दत की मुख़ालफ़त) से एह़तिराज़ करें (या'नी बचें)।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/299)

﴾81﴿ जिन्नों से मुकालमे (या'नी गुफ़्तगू) की ख़्वाहिश और मुसाह़बत की तमन्ना (में) अस्लन ख़ैर नहीं (या'नी कोई भलाई नहीं), कम से कम जो इस का ज़रर (या'नी नुक़्सान) है येह कि आदमी मुतकब्बिर हो जाता है।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/606)

﴾82﴿ मुआ़फ़िये तक़्सीर (या'नी ग़लती को मुआ़फ़ करने) में कभी ताख़ीर ही मस्लह़त होती है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/606)

﴾83﴿ (प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा ज़मीन पर दस्तर ख़्वान बिछा कर खाना तनावुल फ़रमाना थी और येही अफ़्ज़ल (है)।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/629)

﴾84﴿ विलायत कस्बी (या'नी कोशिश से ह़ासिल होने वाली) नहीं मह्ज़ अ़त़ाई (या'नी **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से मिलने वाली) है।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/606)

﴾85﴿ ख़लीफ़ा व वारिस में फ़र्क़ ज़ाहिर है कि आदमी की तमाम औलाद उस की वारिस है मगर जा नशीन होने की लियाक़त हर एक में नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/532)

﴾86﴿ जब तक ज़ीस्त (या'नी ज़िन्दगी) है (मुसल्मान को चाहिये कि) आयात व अह़ादीसे ख़ौफ़ के तरजमे अक्सर सुना और देखा करे और जब वक़्त बराबर (या'नी मौत का) आ जाए, (दूसरे लोग) उसे आयात व अह़ादीसे रह़मत मअ़ तरजमे के सुनाएं कि जाने कि किस के पास जा रहा हूं ताकि अपने रब के साथ नेक गुमान करता उठे। (फ़तावा रज़विय्या, 9/82)

﴾87﴿ सब में पहले येह लक़ब (क़ाज़ियुल कुज़ाह) हमारे इमामे मज़हब "**इमाम अबू यूसुफ़** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه" का हुवा।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/352 ता 353 मुलख़्ख़सन)

﴾88﴿ सलफ़ सालेह़ (या'नी पहले के ज़माने के नेक बन्दों) की ह़ालत जनाज़े में येह होती कि ना वाक़िफ़ को न मा'लूम होता कि इन में अहले मय्यित

कौन है और बाक़ी हमराह कौन, सब एक से मग़मूम व महज़ून (या'नी ग़मज़दा) नज़र आते और अब ह़ाल येह है कि (लोग) जनाज़े में दुन्यावी बातों में मश्ग़ूल होते हैं, मौत से उन्हें कोई इ़ब्रत नहीं होती, उन के दिल इस से ग़ाफ़िल हैं कि मय्यित पर क्या गुज़री ! (फ़तावा रज़विय्या, 9/145)

﴾89﴿ शराब ह़राम है और सब नजासतों गन्दगियों की मां है। इस के पीने वाले को दोज़ख़ में दोज़ख़ियों का जलता लहू और पीप पिलाया जाएगा।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/659)

﴾90﴿ सुन्नी मुसल्मान अगर किसी पर ज़ालिम नहीं तो उस के लिये बद दुआ़ न (करनी) चाहिये बल्कि दुआ़ए हिदायत की जाए कि जो गुनाह करता है छोड़ दे। (फ़तावा रज़विय्या, 23/182)

﴾91﴿ (बे नमाज़ी) ऐसा मुसल्मान है जैसा तस्वीर का घोड़ा है कि शक्ल घोड़े की और काम कुछ नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 23/99)

﴾92﴿ मस्जिद बनाना ख़ैरे कसीर है ख़ुसूसन अगर वहां मस्जिद की ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) हो तो उस के फ़ज़्ल (या'नी फ़ज़ीलत) की ह़द ही नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/396 मुल्तक़त़न)

﴾93﴿ क़ुरआने अ़ज़ीम के मत़ालिब (या'नी मआ़नी) समझना बिला शुबा मत़लूबे आ'ज़म है मगर बे इ़ल्मे कसीर व काफ़ी के तरजमा देख कर समझ लेना मुम्किन नहीं बल्कि इस के नफ़्अ़ (या'नी फ़ाएदे) से इस का ज़रर (नुक़्सान) बहुत ज़ियादा है जब तक किसी आ़लिम माहिर कामिल सुन्नी दीनदार से न पढ़े। (फ़तावा रज़विय्या, 23/382)

﴾94﴿ (जुज़ामी या'नी कोढ़ के मरज़ वाले के साथ खाना) ब क़स्दे तवाज़ोअ़

व तवक्कुल व इत्तिबाअ़ (या'नी आ़जिज़ी, **अल्लाह** पर भरोसे से) हो तो सवाब पाएगा। (फ़तावा रज़विय्या, 21/102)

95 वज़ाइफ़ जो अह़ादीस में इर्शाद हुए या मशाइख़े किराम ने बत़ौरे ज़िक्रे इलाही बताए उन्हें बिला वुज़ू भी पढ़ सकते हैं और बा वुज़ू बेहतर।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/399)

96 रात को आईना देखने की कोई मुमानअ़त नहीं, बा'ज़ अ़वाम का ख़याल है कि उस से मुंह पर झाइयां (Freckles) पड़ती हैं, और इस का भी कोई सुबूत न शर्अ़न है न त़िब्बन न तजरिबतन। (या'नी येह बात न शरीअ़त से साबित है, न मेडीकल से और न ही तजरिबे से।)

(फ़तावा रज़विय्या, 23/490)

97 बुरी बात के लिये सिफ़ारिश करना मसलन सिफ़ारिश कर के कोई गुनाह करा देना शफ़ाअ़ते सय्यिआ (या'नी बुरी सिफ़ारिश) है, इस के फ़ाइल (या'नी सिफ़ारिश करने वाले) पर इस का वबाल है अगर्चे (उस की सिफ़ारिश) न मानी जाए। (फ़तावा रज़विय्या, 23/407)

98 आदमी को अगर पुलाव की रिकाबी (या'नी प्लेट) दी जाए और कह दें कि इस के ख़ास वस्त़ (या'नी दरमियान) में रुपिया भर जगह के क़रीब संखिया (या'नी ज़ह्र) पिसी हुई मिली है, डरते डरते किनारों से खाएगा और बजाए एक रुपिया के चार रुपिये की जगह छोड़ देगा। काश ! ऐसी एह़तियात़ जो अपने बदन की मुह़ाफ़ज़त में करता है क़ल्ब (या'नी दिल) की निगाह्दाश्त (या'नी निगरानी) में बजा लाता। (फ़तावा रज़विय्या, 23/518)

99 जिसे आ़म लोग नहूस (या'नी मन्हूस) समझ रहे हैं उस से बचना

मुनासिब है कि अगर ह़स्बे तक़्दीर उसे कोई आफ़त पहुंचे उन का बात़िल अ़क़ीदा और मुस्तह़्कम (या'नी मज़बूत़) होगा कि देखो येह काम किया था उस का येह नतीजा हुवा और मुम्किन (है) कि शैत़ान इस के दिल में भी वस्वसा डाले। (फ़तावा रज़विय्या, 23/267)

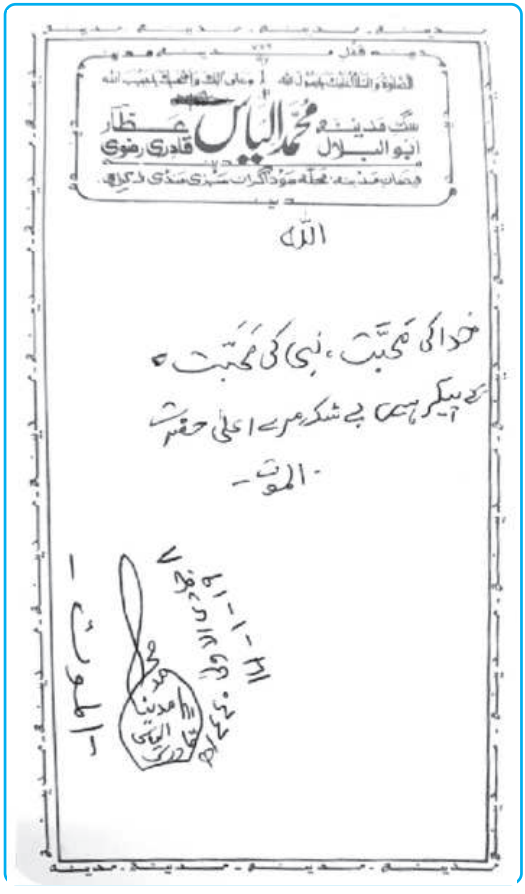

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

आ'ला ह़ज़रत के "अक़ूल" (या'नी फ़रमान) पर हमारी "उ़क़ूल" (या'नी अ़क़्लें) क़ुरबान, उन का अक़ूल हमें क़बूल।

(तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 63)

978-969-722-006-9
01082190

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net